International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

वैशेषिक दर्शन में अनुमान प्रमाण

डॉ. बबलू पाल
अतिथि प्रवक्ता
संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,प्रयागराज

प्रस्तावना :

किसीभीदार्शनिकसम्प्रदायमेंप्रमाणकीमहत्ता उतनी हीसर्वोपरिहै, जितनीकिउनकेसिद्धान्त, क्योंकिउनकेसिद्धान्ततभीतार्किक,युक्तिसंगत ववविश्वसनीयमानेजासकतेहैं, जबउनमेंकोईप्रबलप्रमाणहो, अतःसभीभारतीयदार्शनिकसम्प्रदायोंनेमुक्तकण्ठसेइसेस्वीकारकियाहै।यहअलगबातहैकिभिन्न-भिन्नदार्शनिकसम्प्रदायोंनेइसकीसंख्याभिन्न-भिन्नमानीहै।अतःइनप्रमाणोंकासंक्षिप्तविवेचनअपेक्षितहै, किन्तुशोधविषयकीदृष्टिसेकेवलवैशेषिकदर्शनमेंविवेचितप्रमाण-मीमांसाके अनुमान प्रमाण काहीउल्लेखकियाजारहाहै।महर्षि कणाद ने अपनेवैशषिकदर्शनमेंमुख्यतःदोहीप्रमाणस्वीकारकियेगयेहैं- प्रत्यक्षऔरअनुमान।किन्तुकुछविद्वान्शब्दकोभीप्रमाणस्वीकारकरतेहैंजैसाकिव्योम-शिवाचार्यकेनिम्नकथनसेस्पष्टहै- *'ननु'शाब्द-ज्ञानस्यापिविद्यारूपत्वात्इहमुपन्यासेकिम्प्रयोजनम्?विप्रतिपत्ति ज्ञानम्इति।तथाहिशाब्दमनुमानेऽन्तर्भवतीतिकेचित्।अन्येतुप्रमाणान्तरमितिवैशेषिकाणा स्विप्रतिपत्तिःतेनइहाऽनभिधानात्।"*[1]शब्दप्रमाणकोही'व्याप्य'वचनया'व्याप्य'प्रमाणभीकहाजाताहै, 'व्याप्य'काअर्थहैयथार्थवक्ता।यहाँयथार्थवक्तासेअभिप्राय वेदआदिशास्त्रोंसेहै।जैसाकिस्वयंसूत्रकारनेभीवेदशास्त्रोंकोप्रमाणकेरूपमेंस्वीकार

1 व्योम, पृ. ५५४

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

भीकियाहै।आत्मनानात्वकेविवेचनमेंउन्होंने'*व्यवस्थातोनाना*'[2]'कहकरपुनः'

'*शास्त्रसामर्थ्याच्च*'

[3]कहकरयहस्वीकारकियाहैकिआत्मनानात्वकीसिद्धिमेंवेदशास्त्रभीप्रमाणहैं। 'मोक्ष' केविवेचनमेंभीसूत्रकारनेशास्त्रोंकोहीप्रमाणरूपमेंस्वीकारकियाहै'*आत्मकर्मसुमोक्षोव्याख्यात:*'[4]अतःयहमाननाउचितहीहोगाकिवैशेषिकदर्शनशब्दप्रमाणकोभीस्वीकारकरताहै, किन्तु पृथक् प्रमाण के रूप में नहीं।

वैशेषिक दर्शन में अनुमान प्रमाण :

'प्रमाण'शब्द'प्र'उपसर्गपूर्वक'मा'धातुसेकरणमेंल्युटप्रत्ययलगने से बनताहै।यहाँ'प्र'उपसगकेसंयोगमें'मा'धातुकाअर्थ'तद्वतितत्प्रकारकंज्ञान'हीहोताहै।प्रमाण कालक्षणहै- 'प्रमाकरणम्प्रमाणम्'अर्थात्'प्रमा' के करण को 'प्रमाण' कहते हैं। यथार्थज्ञानकोहीप्रमाकहतेहैं,

प्रमाणविवेचनकाक्रमइसी'प्रमा'शब्दसेआरंभहोताहैअतःइसकाविवेचननिम्नवत्है-

संस्कारमात्रजन्यंज्ञानंस्मृति।तद्भिन्नंज्ञानमनुभवः।सद्विविधःयार्थोऽयथार्थश्च।तद्वतितत्प्रकारकोऽनुभवोयथार्थः। यथा-रजते'इदं 'रजतम्'इतिज्ञानम्।सैवप्रमोच्यते।तदभाववति तत्प्रकारकोअनुभवोअयथार्थः यथा शुक्तौ 'इदं ज्ञानम्।सैवप्रयोच्यते।[5]यहयथार्थनुभव (प्रमा) चारप्रकारहै'प्रत्यक्ष, अनुमति, उपमिति, तथाशब्द[6]इनके भी चार करण हैं।[7] अर्थात्प्रत्यक्ष, अनुमान उपमान, औरशब्दकेभेदसेप्रमाकाकरणचारप्रकारकाहोताहै। आचार्यप्रशस्तपादनेबुद्धिउपलब्धि,ज्ञानऔरप्रत्यय,

इनशब्दोंकोअविधावृत्तिकेद्वाराएकहीअर्थकेबोधकमानेहैं।इसीबुद्धिकेअनेकभेदस्वीकारकिये

---

[2]वैशेषिकसूत्र,३.२.२०

[3] वैशेषिकसूत्र,३.२.२१

[4] वैशेषिकसूत्र, ६.२.१६

[5] तर्कसंग्रह, पृ. ४४-४५

[6] यथार्थानुभवश्चतुर्विधः, प्रत्यक्षानुमित्युपमितिशब्दभेदात्। वही.

[7] *तत्करणमपिचतुर्विधम्-प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दभेदात्।* वही.पृ. ४६.

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

हैं, किन्तुसंक्षेपतःदोहीभेद-विद्या (यथार्थज्ञान), औरअविधा (अयथार्थज्ञान) स्वीकारकियाहै।[8]पुनःअवधिकेचारभेदकियेहैं, संशय, विपर्यय, स्वप्न, तथाअनध्यवसाय।औरविद्याकेभीचारभेदहै।- इन्द्रियज, अनिन्द्रियज, स्मृतितथाआर्ष। इन्द्रियकेदोभेद-सर्वज्ञीय, असर्वज्ञीय।असर्वज्ञीयदोप्रकारकीहै- सविकल्पक, निर्विकल्पक।इनमेंसेअनिन्द्रियज विद्याअनुमानहैतथाआर्षविद्यायोगियोंकाप्रत्यक्षहै।[9]

अनुमानप्रमाण

'अनुमानशब्दकीव्युत्पत्तिदोप्रकार सेकीजासकतीहै- *अनुमीयतेऽनेनेतिअनुमानम्' (कारणाऽधिकरणयोश्चेतिकरणेव्यूट्प्रत्ययः)*

*प्रमाणम्।तथा' अनुमितिअनुमानम्'*अतःइसव्युत्पत्तिकेअनुसारअनुमानशब्दका अर्थ है- अनुमित्यात्मकज्ञान, अर्थात्ऐसायथार्थज्ञानजोअनुमानद्वाराज्ञेयहो।'अनु' उपसर्गपूर्वक'मा'धातुसेकरणअर्थमेंव्युट् (अन) प्रत्ययलगकर अनुमानशब्दनिष्पन्नहोताहै।'अनु'काअर्थहैपश्चात्तथा'मान'काअर्थहैज्ञानयाप्रमाण।प्रत्यक्षकेपश्चात्

प्रवृत्तहोनेसेइसेअनुमानकहाजाताहै।अनुमितिप्रयोजकतत्त्वोंकेलिएतीनपारिभाषिकशब्दों- व्याप्ति, पक्षधर्मता, तथापरामर्शकाप्रयोगकियागयाहै। तर्कभाषाकार ने अनुमान का लक्षण किया है-*'लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्। येन् हि अनुमीयते तदनुमानम्। लिङ्गपरामर्शेन चानुमीयतेऽतो लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्।'*[10] अर्थात् लिङ्गपरामर्श ही अनुमान कहलाता है। पुन: लिङ्ग का लक्षण करते हुए तर्कभाषाकार ने कहा है- *व्याप्तिबलेनार्थगमकं लिङ्गम्*[11] अर्थात् व्याप्ति के बल से जो अर्थ का बोध कराने वाला होता है उसे ही लिङ्ग कहा जाता है। संक्षेपमेंउक्ततीनोंपारिभाषिकशब्दोंकाविवेचननिम्नवत्है-

---

8 बुद्धिरुपलब्धिर्ज्ञानं प्रत्यय इति पर्यायाः।साचानेकप्रकारा,अथार्नन्त्यात्प्रत्यर्थनियतत्वाच्च। .....द्वे विधे विद्या चाविद्या चेति। तत्राविद्या चतुर्विधा- संशयविपर्ययानध्यवसायस्वप्नलक्षणा। प्र.पा.भा. पृ. ४१०-४११

9 प्रशस्थपादभाष्य पृ. ८९,तथाकणाद रहस्य, ११५

[10]तर्कभाषा, पृ.१२०

11 तर्कभाषा,पृ.१२२

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

व्याप्ति-

*शङ्कितनिश्चतोभयविधव्यभिचाराभावपूर्वकःहेतोःसाध्येनसहचाराव्याप्तिः।*अर्थात्'साध्य' के साथहेतुकावैसासहचारजिसकेव्यभिचारकानिश्चयअथवासंदेहभीनहो, व्याप्तिहै। *साहचर्यनियमो व्याप्तिः*[12]*स्वाभविकोसम्बन्धः व्याप्तिः*[13]यथा-यत्र-यत्रधूमःतत्र-तत्रवह्निःयहां धूमकीव्याप्तिवह्निके साथ है, क्योंकिमहानसआदिमेंधूमकावह्निकेसाथसहचारहैतथाकहींपरभीवह्निकेअभावमेंधूमकी सत्ताकानिश्चयनहोनेसेनिश्चितव्यभिचारकाअभावभीहै।यद्यपिव्यभिचारशङ्कितहोसकता हैकिसम्पूर्णजगत्

तथाअनन्तकालमेंकहींभीकिसीभीसमयधूमकीसत्ताअग्निकेअभावमेंभीहोसकतीहै,

किन्तुतर्ककेद्वाराइसशङ्कितव्यभिचारकीनिवृत्तिहोजातीहै-

'*धूमोयदिवह्निव्यभिचारीस्यात्तर्हिवह्निजन्योनस्यात्*'काअभिप्राययहहैकिकारणकेअभाव मेंकार्यकाभीअभावहोताहैअतःस्पष्टहैकिकार्यकीसत्ता कारणकीसत्ता कोप्रमाणितकरतीहै।यहनिःसंदेहरूपसेसर्वविदितहैकिधूमकार्यहैतथावह्निकारण। स्वाभाविक सम्बन्ध को ही व्याप्ति कहते हैं न कि औपाधिक सम्बन्ध को। धूम और अग्नि का सम्बन्ध स्वाभाविक सम्बन्ध है न कि औपाधिक। अत: जहां-जहां धूम होगा वहां-वहां अग्नि अवश्य होगी, यह शुद्ध अनुमान होगा।

उपाधिकालक्षण :

'साध्यव्यापकत्वे सतिसाधनाऽव्यापकत्मुपाधिः[14]'साध्य'व्यापककाअर्थहै-साध्याधिकारणनिष्ठअत्यन्ताभावकाअप्रतियोगी ('साध्य'केसाथ-साथसर्वत्रविद्यमानपदार्थ) तथासाधनाव्यापककाअर्थहै- 'हेत्वाधिकारण-निष्ठात्यन्ताभावकाप्रतियोगी' (हेतुकेसाथ-साथसर्वत्रविद्यमाननरहनेवालापदार्थ)।

उपर्युक्तलक्षणकेदोनोंअंशजहाँनिश्चितहोतेहै, वहाँनिश्चित उपाधिहोतीहै, तथाउपर्युक्तदोनोंअंशोंमेंयदिकिसीभीअंशमेंसंदेशरहताहैतोशंकितउपाधिकहलातीहै।

[12]तर्कभाषा, पृ. ११९

[13]तर्कभाषा, पृ. १३५

[14] तर्कभाषा, पृ. १२६

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

शंकितउपाधि : एक मित्रा की स्त्री थी। उसने अपनी दुरवस्था में हरित-शाक आदि खाकर चार पुत्रों को उत्पन्न किया। शाकादि-भोजन के परिणामस्वरूप उसके चारों ही पुत्र काले निकले। इसी स्थिति में यज्ञदत्त के साथ देवदत्त कहीं दूर-देश चला जाता है। ५ वर्षों के बाद देवदत्त सुनता है कि मित्रा ने पञ्चम पुत्र को जन्म दिया। इसकी चर्चा देवदत्त अपने मित्र से करता है। उसका मित्र यज्ञदत्त देवदत्त से पूछ बैठता है कि मित्रा का यह पुत्र किस वर्ण का होगा। यज्ञदत्त के प्रश्न के उत्तर में देवदत्त निम्नलिखित अनुमान वाक्य को प्रस्तुत करता है-"स मित्रातनय: श्याम: मित्रातनयत्वात् दृष्ट-मित्रा-तनयवत्।।" यहां पर साहचर्य नियम न होने के कारण व्याप्ति का अभाव है अत: यह शुद्ध अनुमान का विषय नहीं हो सकता है, इसलिए यह शंकित उपाधि है।

निश्चित उपाधि :

धूम और अग्नि के सम्बन्ध में कोई भी उपाधि नहीं है, इस प्रकार के तर्क के साथ अनुपलब्धि से युक्त प्रत्यक्ष के द्वारा ही उपाधि के अभाव का निश्चय कर लिया जाता है और उपाधि के अभाव के ज्ञान से उत्पन्न संस्कार से युक्त तथा बार-बार एक साथ धूम और अग्नि के दर्शन से साहचर्य के ग्राहक प्रत्यक्ष से ही धूम और अग्नि की व्याप्ति निश्चित हो जाती है।

व्याप्तिकेप्रकार- व्याप्तिकेदोभेदहैं- 'अन्वय व्याप्ति'और'व्यतिरेक व्याप्ति'।

१. **अन्वय व्याप्ति'**-

अन्वयकाअर्थहै'तत्सत्त्वेतत्सत्त्वम् ' अर्थात्एककेहोनेपरहीदूसरेकाहोना, अर्थात्, 'साधन'केहोनेपरही'साध्य'कीसत्ताकाहोना।इनकें'साधन'व्याप्तहोताहैतथा'साध्य' व्यापक।व्यापककाअर्थ है 'अधिकदेशवृत्तित्वंव्यापककत्वम् ' अर्थात्अधिकदेशमेंहरनेवाला, तथाव्याप्तकाअर्थहै- 'न्यूनदेशवृत्तित्वम्व्याप्यत्वम् ' अर्थात्कमदेशमेंरहनेवाला।धूमऔरअग्निकीव्याप्तिमें धूम'साधन' (व्याप्य) हैतथाअग्नि'साध्य'

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

(व्यापक)।यहाँजोअग्निव्यापकहैवहधूमकीअपेक्षाअधिकदेशमेंरहनेवालाहै, क्योंकिजहाँधूमहोताहैवहाँकोअग्निहोतीहैकिन्तुइसकेअतिरिक्तलौहपिण्डतथासूर्या दिमेंभीअग्निकीविद्यमानतादेखीजातीहै,

परन्तुवहाँधूमनहींहोती।अतःदोनोंकाव्याप्त-

व्यापकसम्बन्धहैअन्वययव्याप्ति।दोभावपदार्थोंकीव्याप्तिही'अन्वय व्याप्ति'हैजैसे-

यत्र-यत्रधूमत्वंतत्रत्वं।यथामहानसे।

२. **व्यतिरेक व्याप्ति'**-

व्यतिरेकेकाअर्थहैअभाव।अतःतेदसत्त्वेतदसत्त्वम्अर्थात्एककेनरहनेपरदूसरेकाभी नहोना।इसकास्वरूपहै- यत्राग्निर्नास्तितत्रधूमोऽपिनास्ति।

परामर्श-

धूम रूप लिङ्ग का तृतीय ज्ञान ही परामर्श है। तर्कभाषाकार ने इसको स्पष्ट करते हुए कहा है कि- *तस्य तृतीयं ज्ञानं परामर्शः। तथाहि प्रथम तावन्महानसादौ भूयो भूयो धूमं पश्यन् बह्निं पश्यति। तेन भूयो दर्शनेन धूमाग्न्योः स्वाभविकं सम्बन्धमवधरयति,यत्र धूमस्तत्राग्निरिति।*[15] *व्याप्तिविशिष्टपक्षधर्मताज्ञानम्*

परामर्शः[16]अर्थात्व्याप्तियापक्षधर्मताज्ञानकामिश्रितरूपहीपरामर्शहै।व्याप्तिज्ञानका स्वरूपहै-'साध्यव्याप्योहेतुः'तथापक्षधर्मताज्ञानकास्वरूपहै-

'हेतुमान्पक्षः'।इनदोनोंकामिश्रणकरदेनेपर''साध्य'व्याप्तहेतुमानपक्षः'ज्ञानकायहीस्वरूपहो गा।इसीज्ञानकोपरामर्शकहाजाताहैइसपरामर्शकेहीदृष्टिमेंरखकरतर्कभाषाकारनेअनुमान कालक्षणदियाहै-

'लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्।येनहिअनुमीयतेतदनुमानम्।लिङ्गपरामर्शेनचानुमीयतेलिङ्गप रामर्शोऽनुमानम्।लिङ्गकालक्षणकरतेहुएतर्कभाषाकारनेकहाहै'व्याप्तिबलेनार्थगमकंलि ङ्गम्'।यथाधूमोऽग्नेर्लिङ्गम्।

[15]तर्कभाषा,पृ.१२२

16 तर्कभाषा,पृ.१२६

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

अनुमितिकेप्रकार-प्रशस्तपादाचार्यनेअनुमितिकेदोभेद-'दृष्टतथासमान्यतोदृष्ट'कियेहैं।[17] प्रकारान्तरसेइसअनुमितिकेदोअन्यभेदभीहैं-स्वार्थानुमानतथापरार्थानुमान।[18]स्वप्रतिपत्तिनिमित्तअनुमानस्वार्थानुमानहै।प्रशस्तपाद काभीकथनहै- *'स्वनिश्चितार्थमनुमानम्' स्वार्थानुमानम्।*[19]परार्थानुमानकेविषयमेंप्रशस्तपादाचार्यकाकथनहै- *पञ्चावयवेनवाक्येनस्वनिश्चितार्थप्रतिपादनंपरार्थानुमानम् पञ्चावयवेनैव वाक्येनसंशयितविपर्यस्ताव्युत्पन्नानां परेषांस्वीनिश्चितार्थप्रतिपादनं परार्थानुमानं विज्ञेयम्।*[20]

---

17 प्रसिद्धसाध्ययोरत्यन्तजातिभेदे लिङ्गानुमेयधर्मसामान्यानुवृत्तितोअनुमानं सामान्यतोदृष्टम्। यथा कर्षकवणिग्राजपुरुषाणां च प्रवृत्तेः फलवत्त्वमुपलभ्य वर्णाश्रमिणामपि दृष्टं प्रयोजनमनुद्दिश्य प्रवर्तमानानां फलानुमानमिति। प्र.पा.भा. पृ. ५०७-५०९

18प्रशस्थपादभाष्य,पृ.५०१२

19 प्रशस्तपादभाष्य,पृ. ५५८-५६०

20 प्रशस्तपादभाष्य,पृ. ५५८-५६०